डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 08.04.2021

पत्र - अष्टम / साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना

काव्य प्रयोजन का शेष....

05. आचार्य विश्वनाथ :- आचार्य विश्वनाथ ने 'पुरुषार्थ चतुष्टय' या चतुर्वर्ग और अग्निपुराणकार ने 'त्रिवर्ग' (मोक्ष को छोड़कर) को ही काव्य प्रयोजन माना है।

06. आचार्य रुद्रट :- आचार्य रूद्रट ने भी पुरुषार्थ चतुष्टय को काव्य प्रयोजन माना है। जिसमें उन्होंने अह्लाद को प्रधानता दी है। कुन्तक ने कहा है —

"धर्मादिसाधनोपाय: सुकुमार क्रमोदित : ।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारक : ॥ (वक्रोक्ति जीवितम् 1-3)

पाश्चात्य चिन्तकों ने भी काव्य प्रयोजन को परिभाषित किया है :—

01. प्लेटो (427-347 ई०पू०) - प्लेटो का काव्य प्रयोजन संबंधी मत के अनुसार मानव-प्रकृति में जो महान और शुभ है, नैतिक और न्यायपरायण है उसका उद्घाटन ही कवि कर्म का मूल होना चाहिए। क्योंकि दार्शनिक के रूप में उनका मूल उद्देश्य 'आदर्श राज्य की स्थापना', 'नागरिकों को उचित शिक्षा', 'चरित्र निर्माण', 'नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा' आदि जैसे लोकमंगल कार्य को समाज में प्रतिष्ठित करना था। संक्षेप में कवि - दार्शनिक प्लेटो ने कला के आनंद - सिद्धांत से आगे बढ़कर लोकमंगल

सिद्धांत की महत्व प्रतिष्ठा की हैं।

(02) अरस्तू :- अरस्तू ने कदाचित् प्लेटो के विचार को ही स्वीकार कर आनंद और लोकमंगल सिद्धांत को काव्य का प्रयोजन माना है। काव्यशास्त्र के आरंभ में ही उन्होंने काव्य के दो मुख्य प्रयोजन माने हैं —

(क) शिक्षा (ज्ञानार्जन) (ख) आनंद।

अरस्तू के अनुसार काव्य का सार्वभौमिक सत्य मूलतः मानव सत्य का पर्याय है।